सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशि, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा- आठवीं पाठ - ५

विषय - हिंदी व्यवहारिक कुंडलिया

मौखिक प्रश्नों के उत्तर -

बोलकर

(क) इस संसार में बिना किसी गरज़ या स्वार्थ के मित्रता रखने वाले मित्र दुर्लभ हैं।

(ख) सबसे प्रति विनम्रता रखने के लिए हमेशा मीठे वचन बोलने चाहिए।

(ग) कवि अपना मन उस बात में लगाने के लिए कहा हैं जो सहज रूप से बन जाए।

(घ) व्यक्ति के मन में रात दिन यह बात खटकती रहती है कि मैंने बिना विचारे यह कार्य क्यों किया? क्योंकि बिना विचार के कार्य करने पर काम बिगड़ता है और जग में उसकी हँसी होती है। इससे वह दुखी होकर पछताता है।

लिखकर

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

(क) धन के अभिमान को कवि ने इसलिए अनुचित ठहराया क्योंकि धन चंचल होता है। सिर्फ़ चार दिन पास रहता है अर्थात् धन किसी के पास स्थाई रूप से नहीं रहता।

(ख) कवि बीती बातों को भूलकर आगे की सुध लेने की बात इसलिए कह रहा है क्योंकि जो बात बीत गई उसके बारे में विचार करने से कोई लाभ नहीं है।

(ग) बिना सोच विचार के काम करने पर व्यक्ति को बाद में पछताना पड़ता है क्योंकि बिना विचारे काम करने पर काम बिगड़ता है और फिर जग में हँसी होती है।

(घ) गिरिधर कविराय ने स्वार्थ की मित्रता को अच्छा नहीं माना है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर–

(क) पैसों के अभाव में मित्रों का व्यवहार बहुत बुरा हो जाता है क्योंकि जो सिर्फ़ स्वार्थ के साथी होते हैं, वे पैसा न होने पर हमसे बात तक नहीं करते।

(ख) कवि के अनुसार हमेशा मीठे वचन बोलने चाहिए और सबके प्रति विनम्रता का व्यवहार रखना चाहिए क्योंकि दौलत कभी-भी स्थायी नहीं होती। अत: इस संसार में दौलत पाकर भी विनम्र बने रहना चाहिए, भूलकर भी अभिमान नहीं करना चाहिए।

(ग) मन की शांति पाने के लिए कवि यह सुझाव दे रहे हैं कि हमें बिना विचारे कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि हड़बड़ी में, बिना सोचे-समझे कार्य करने पर वह कार्य बिगड़ जाता है। फिर काम बिगड़ने पर सब लोग हम पर हँसते हैं, जिससे हमारे मन की शांति खत्म हो जाती है और चित्त बेचैन हो जाता है।

(घ) विनम्रता और मीठे बोल का हमारे जीवन में बहुत महत्व है क्योंकि इन गुणों से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं और जगत में लोगों के प्रिय बन सकते हैं। इन गुणों से हम सबका सम्मान भी प्राप्त कर सकते हैं।

पंक्तियों के भाव स्पष्ट–

(क) कवि का कहना है कि यह संसार बहुत मतलबी है। इस संसार में लोग जो भी व्यवहार करते हैं वह सब स्वार्थ और मतलब पर ही टिका होता है।

(ख) कवि कह रहे हैं कि यदि हमें यश प्राप्त करना है और सब का प्रिय बनना है तो हमें हमेशा मीठे वचन बोलने चाहिए तथा सबके साथ विनम्र व्यवहार करना चाहिए।

(ग) कवि यह सलाह दे रहे हैं कि हमें कभी भी कोई भी कार्य जल्दबाज़ी में तथा बिना सोचे समझे नहीं करना चाहिए क्योंकि हड़बड़ी में कार्य करने पर हमें बाद में पछताना पड़ सकता है।

पठित गद्यांश

(क) **कविता**- व्यावहारिक कुंडलियाँ। **कवि**- गिरिधर।

(ख) इस संसार में लोगों का व्यवहार मतलब का होता है।

(ग) पैसा पास होने पर सब हमारे मित्र बन जाते हैं।

(घ) पैसा पास न होने पर मित्र हमसे बोलते तक नहीं हैं।

(ङ) जगत के दो **पर्यायवाची शब्द**- संसार, लोक।